शौरसेनी प्राकृत में भाषा–तत्त्व

रामधनी राम

डॉ० दुधनाथ चौधरी

शौरसेनी और मागधी प्राकृत से निर्मित यह 'अर्धमागधी' प्राकृत साहित्य के लिए नयी भाषा होने के कारण इसके नाम का उल्लेख भी कुछ परवर्ती ग्रन्थों में किया गया। यह अर्धमागधी प्राकृत श्वेताम्बर–परम्परा के धार्मिक ग्रन्थों की भाषा बनी रही। इस 'अर्धमागधी प्राकृत' में फिर अन्य कोई लोक–साहित्य नहीं लिखा गया; क्योंकि यह प्राकृतभाषा जन–सामान्य में प्रचलित नहीं थी। इसलिए श्वेताम्बर–परम्परा के परवर्ती धार्मिक कथा–ग्रन्थों और व्याख्या–साहित्य के लिए 'महाराष्ट्री प्राकृत' का प्रयोग किया गया, जो 'शौरसेनी प्राकृत' का भी विकसित रूप है। दिगम्बर–परम्परा ने धार्मिक कथा और काव्य–ग्रन्थों के लिए शौरसेनी प्राकृत से विकसित अपभ्रंश भाषा का प्रयोग किया। इस प्रकार भगवान् महावीर के बाद लगभग दो हजार वर्षों तक जैन ग्रन्थों के साथ शौरसेनी, अर्धमागधी, महाराष्ट्री प्राकृतों एवं अपभ्रंश भाषा का सम्बन्ध बना रहा है। अतः प्राकृत जैन–परम्परा की मूलभाषा है। ध्यातव्य है कि जैनाचार्यो ने भारत की प्रायः सभी भाषाओं में अपना साहित्य लिखा है।